रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १०: गभीरा (गहराई)

‘गभीरा’, ‘गहराई’, एकाग्र स्वभाव वाले द्रष्टा जिनकी गहरी नज़र से प्रभावी कार्रवाई के लिये आवश्यक फ़ैसले लेना आसान हो जाता है। 'ढाकेश्वरी' के शहर में गुरु नानक का स्वागत सुंदरवन डेल्टा के वासियों ने किया।

नानक आखै एहु बीचार ॥
सिफती गंढुपवै दरबार ॥
(राग माझ, गुरु नानक)

नानक ने यह विचार साझा किया
शुकराने की गांठ बांध कर प्रशंसा का रास्ता मिलता है।
(राग माझ, गुरु नानक)

गुरु नानक ने अपनी वाणी में उप-बोलियों का भी इस्तेमाल किया ताकि आम आदमी से संवाद कायम किया जा सके । उनके वैश्विक और मानवीय संदेश के परिणामस्वरूप, विभिन्न पृष्ठभूमि के तहज़ीबी, मज़हबी और भाषाई लोग उनके फ़लसफ़े के दायरे में आने लगे।

सोनपुर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने मुंगेर, भागलपुर, कंत नगर, मालदा, ढाका और डुबरी होते हुये गुवाहाटी का सफ़र किया।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सोनपुर से गंगा नदी में किश्ती से मुंगेर का सफ़र किया।

गुरु नानक के सफ़र के पदचिन्हों पर चलते हुये हम मुंगेर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गंगा नदी के किनारे गुरु नानक और भाई मरदाना ने मुंगेर में कंगन घाट पर ठहराव किया।

सातवीं शताब्दी के चीनी मुसाफ़िर ह्यून सांग ने अपने सफ़रनामे में दर्ज किया है कि उसने मुंगेर में कई बौद्ध मठों और मंदिरों को देखा था। मुंगेर के लोग शिव और शक्ति की पूजा करते थे। इस क्षेत्र में इस्लाम का आगमन तेरहवीं शताब्दी में तुर्की शासक के दौर में हुआ।

मुंगेर में छोटी सी सिख बिरादरी है। वह 1947 के विभाजन के बाद यहां आबाद हो गयी थे।

स्थानीय लोगों ने बताया कि इससे पहले उदासीन संप्रदाय ने गंगा नदी के तट पर गुरु नानक के नाम पर एक बड़ा स्थान बनवाया था। वह स्थान बाढ़ में बह गया था।

हम बेलन बाज़ार में गुरु नानक और गुरु तेग बहादुर के मुंगेर में आगमन के याद में बने स्थान के दर्शन करने जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: संगत के जोड़-मेल के लिये बने इस स्थान को गुरुद्वारा पक्की संगत कहा जाता है। उदासीन संप्रदाय ने मुंगेर में गुरु नानक के आगमन के याद में इस स्थान का निर्माण किया था।

इस प्राचीन स्थान का निर्माण बाबा परदेशी राम जी उदासीन ने करवाया था। जब उन्नीस सौ चौंतीस के भूकंप में जब यह तबाह हो गया, तो उन्नीस सौ पैंतीस में बाबा रामदास जी उदासीन ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। हमें बताया जाता है कि अब भारतीय फ़ौज के सिख फ़ौजियों की संगत इस स्थान पर एकत्रित होती है। एक स्थानीय परिवार इस स्थान की देखभाल करता है, जो उदासीन संप्रदाय से जुड़ा है। इस परिवार की वर्तमान पीढ़ी गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ को पढ़ना नहीं जानती है, लेकिन वह साप्ताहिक संगत के दौरान सबद गाकर वाणी को समझने की कोशिश करते हैं।

गुरु नानक की वाणी में 'सबद' और 'नाम' का उल्लेख बार-बार आता है। मै पढ़ने और समझने की गुणवत्ता के बारे सोचता हूँ कि हम में से कितने लोग, गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करते समय, इसमे दर्ज़ शबदों को गेहराई से समझने की कोशि्श करते हैं।

भवजल बिन सबदै किउ तरीऐ ॥
नाम बिना जग रोग बिआपिआ दुबिधा डुब डुब मरीऐ ॥
(राग भैरव, गुरु नानक)

ज्ञान के बिना दुनयावी–भवजल पार नहीं किया जा सकता।
रूहानी विवेक के बिना दुनिया दुविधा रोग की चपेट में है। वह संशय में डूबी है और गर्क हो रही है।
(राग भैरव, गुरु नानक)

'सबद' का भाव ज्ञान है जो संवाद का साधन बन जाता है और जिसके माध्यम से 'नाम', आत्म-पड़चोल वाला विवेक, व्यवहार में आता है। 'सबद' किश्ती और 'नाम' चप्पू हैं जो दुनयावी–भवजल को पार करने में मदद करतें हैं।

मुंगेर से गंगा के किनारे सफ़र करते हुये गुरु नानक और भाई मरदाना भागलपुर पहुंचे।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर भागलपुर का सफ़र कर रहे हैं।

भागलपुर में सबसे पहले हम बूढ़ानाथ घाट पर जा रहे हैं। गंगा नदी के तट पर ऐतिहासिक बूढ़ानाथ मंदिर है। स्थानीय लोगों ने बताया कि उदासीन संप्रदाय ने बूढ़ानाथ घाट पर गुरु नानक और गुरु तेग़ बहादुर की याद में गुरुद्वारा बनाया था। हमें यहां उस गुरुद्वारे की कोई निशानी नहीं मिली।

स्थानीय लोगों ने हमें एक ऐसे परिवार का घर बताया, जिसके पूर्वज बूढ़ानाथ घाट गुरुद्वारे के महंत होते थे।

सुजीत कुमार दास: मेरा नाम सुजीत कुमार दास है, मेरे पिता जी का नाम श्री सोद कुमार दास, और मेरे दादा जी यहाँ के महंत थे। उनका नाम महंत श्री सन सरण दास था। हम चार-पांच पीढ़ियों से इस जगह पर हैं। श्री गुरु महाराज जी की सेवा कर रहे हैं। गुरु महाराज जी का ग्रंथ साहिब है, हमने अपने दादा-पड़दादे से पता चला कि वह यहां कई पीढ़ियों से हैं। हमारे पूर्वज बचपन में कहानी सुनाया करते थे कि जो हमारे पहले गुरु हैं, गुरु नानक देव जी के चरणकमल इस स्थान पर पड़े हैं और उसके बाद ही वह चारों ओर उनके श्रद्धालु बन गये, वह उनके मार्ग पर चलना चाहते थे।यहां हर रोज़ सुबह-शाम कीर्तन भजन होता था। हमने भी सहयोग किया। यहां एक बड़ा गुरुद्वारा हुआ करता था। हमारे पहले गुरु, गुरु नानक जी शांति के दूत थे। वह जगह-जगह जाकर उपदेश देते थे कि भाईचारे और प्रेम से रहो। सभी धर्म एक हैं। वह निरंकार ब्रह्म में विश्वास करते थे। उनके अनुसार अनंत ब्रह्मांड ही निरंकार ब्रह्म है। उसके बाद हम उनके बताए रास्ते पर चलते हैं।

अब हम बूढ़ानाथ घाट के पास बने गुरुद्वारा बड़ी संगत जा रहे हैं।

(गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ)

यह गुरुद्वारा भागलपुर की सिख संगत ने नौवे नानक, गुरु तेग बहादुर के यहां आने की याद के मे उन्नीस सौ चौहत्तर मे बनवाया था।

भागलपुर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने कंत नगर का सफ़र किया।

हम अब भागलपुर से कंत नगर जा रहे हैं। गंगा नदी के किनारे यह कस्बा बिहार राज्य के पूर्णिया ज़िले में स्थित है।

किसी समय कंत नगर क्षेत्र में गुरु नानक के बिहारी मूल और विभिन्न मज़हबी पृष्ठभूमि वाले भक्तों की एक बड़ी संगत थी। बिहारी मूल की स्थानीय संगत ने इन दूर-दराज़ के इलाकों में कई स्थान बनवाए हैं। हम दूर-दराज़ के एक गांव के गुरुद्वारे जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: गंगा नदी के किनारे बसे गांव कंत नगर का दौरा गुरु नानक और भाई मरदाना ने किया था। उनके आगमन की याद में स्थानीय बिरादरी ने गुरुद्वारा बनाया है।

हम बिहारी मूल के एक स्थानीय सिख त्रिलोक सिंह से मिले। उन्होंने बताया कि कंत नगर के आसपास के क्षेत्र में गुरु नानक के संदेश को पहुंचाने में उदासीन संप्रदाय के महर्षि दास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

त्रिलोक सिंह: कई साल पहले हमने अपने पूर्वजों से सुना था कि गुरु नानक देव जी यहां आये थे। कंत नगर में बड़ी संख्या में संगत नानक नाम लेवा बनीं। जैसे-जैसे उनका फ़लसफ़ा लोकप्रिय होता गया, वैसे-वैसे उनकी स्वीकृति भी होती गई। उसी तरह लोगों ने अपना प्रचार कार्य किया, मानस की जात एको पहचानबो। गुरु नानक देव जी ने वहदत को अपने संदेश की धुरी बनाया। इस संदेश का पालन करने वाले लोग गुरु नानक के मार्ग के अनुयायी हैं। गुरु नानक के नक्शेकदम पर चलने वालों में महरसी दास भी थे। उन्होंने सत्संग की स्तुति और व्याख्या की। उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने सत्संग करना शुरू कर दिया और लोग शामिल होने लगे। यह सभी गुरु नानक देव जी का सतसंग करते थे। वह वचन करते थे कि हमारे गुरु, गुरु नानक हैं। उन्होंने भागलपुर के पास एक स्थान बनवाया जिसे हम कुप्पा घाट कहते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं एक साथ कई काम आसानी से करती हैं; बच्चों की परवरिश के साथ-साथ परिवार के लिये चूल्हे चौके और खेत का काम भी करती हैं। उनकी इस मेहनत को देखकर गुरु नानक का यह सबद मेरे ध्यान में आता है।

भंडहु ही भंड ऊपजै भंडै बाझ न कोइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

हम सभी औरत की कोख से जन्मे हैं। औरत के बिना कोई नहीं होता।
(राग आसा, गुरु नानक)

ऐतिहासिक रूप से दुनिया भर में जीवनदायिनी महिला को पितृसत्तात्मक समाज ने बराबरी का दर्जा नहीं दिया है। गुरु नानक ने लैंगिक भेदभाव के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई। उन्होंने समाज को जताया कि महिलाओं के बिना मानव जाति आगे नहीं बढ़ सकती।

कंत नगर से गुरु नानक और भाई मरदाना ने मालदा का सफ़र किया।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर मालदा जा रहे हैं।

मालदा, इंडिया के राज्य पश्चिम बंगाल का एक शहर है जो बांग्लादेश की सीमा से लगा है। जब गुरु नानक ने इस शहर का दौरा किया, तब इस पर बंगाल राज्य का शासन था।

हम महानंदा नदी के पास पुराने मालदा शहर के गुरुद्वारे जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: महानंदा और गंगा नदियाँ मालदा क्षेत्र से निकलती हैं। जब गुरु नानक यहां आये तो यह व्यापार और यात्रियों के लिये एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था।

उदासीन संप्रदाय ने गुरु नानक के मालदा में आगमन की याद में एक ऐतिहासिक केंद्र का निर्माण किया था। मालदा से लोगों के पलायन के कारण वह स्थान वीरान हो गया। उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के बाद आई मुहाजिर बिरादरी द्वारा उन्नीस सौ साठ के दशक में केंद्र को फिर से स्थापित किया गया था।

मालदा में गुरु नानक से राम देव नाम का एक साहूकार मिला। उसे दौलत का दिखावा करते हुये देख गुरु नानक ने कहा,

चोआ चंदन अंक चड़ावउ ॥
पाट पटंबर पहिर हढावउ ॥
बिन हर नाम कहा सुख पावउ ॥
(गुरु नानक)

कोई शरीर पर चंदन के तेल का लेप कर सकता है।
कोई रेशमी वस्त्र पहन कर सज सकता है।
परन्तु आत्ममंथन के बिना सुख केसे मिल सकता है ?
(गुरु नानक)

गुरु नानक ने राम देव को यह एहसास करवाने के लिये संदेश दिया कि अमीरी के दिखावे से मिलती ख़ुशी खोखली है। शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिये भौतिक वस्तुओं की वासना का त्याग करना पड़ता है।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा गुरु नानक की मालदा क्षेत्र की यात्रा की यादगार के तौर पर बनाया गया था।

स्थानीय बंगाली हिंदू बिरादरी श्रद्धा के तौर पर इस गुरूद्वारे में आती है। मालदा में हमें देखकर, स्थानीय बिरादरी ने हमें अपने मज़हबी समागम में शामिल होने के लिये आमंत्रित किया।

(कृष्ण भजन)

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये, हम अनेक बिरादरियों से मिले, इनके समपृक से हमे तज़रबाती सिखया प्राप्त करने का मौका मिला। बंगाली भक्तों को भजन गाते हुये सुनना मुझे गुरु नानक के सबद की याद दिलाता है।

तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥

हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥
(राग गौरी दीपकी, गुरु नानक)

उस निडर का गुणगान करो।
सदा सुख देने वाले सोहिले पर मैं कुरबान हूँ।
(राग गौरी दीपकी, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि जो मन वहदत के सत्य का ध्यान करता है, वह शाश्वत शांति प्राप्त करता है। दरअसल इस विचार के अनुसार समस्त सृष्टि ही एक अलौकिक घर है जिसमें अनेक प्राणी निवास करते हैं।

मालदा से गुरु नानक और भाई मरदाना ने पूर्व की तरफ गंगा और पदमा नदियों के साथ-साथ सफ़र शुरू किया और ढाका पहुंचे जो अब बांग्लादेश की राजधानी है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से भारत-बांग्लादेश सीमा को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हम हवाई जहाज़ के रास्ते भारत से बांग्लादेश गये और ढाका से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ाया।

आ दोबे देख देखि मन ॥
कि रूप लीलामय ॥
आकाश पाताल खुँजिस यार ॥
एइ देहे से रय ॥
लाम-आलेफ लोकाय येमन ॥
मानुष एइ शाइ आसे तेमन ॥
ता नइले कि सब नुरितन ॥
आदम टोने शेषदा जनाय ॥
(नालोन फ़कीर)

आ मेरे बंजारे मन! डुबकी मार।
तुम जिसकी तलाश आकाश और पृथ्वी पर कर रहे हो
वह तुम्हारे भीतर है।

जैसे 'लाम' और 'अलिफ़' ने ख़ूद को छिपा रखा है
उसी प्रकार मनुष्य में ख़ुदा का वास है।
बंगाली रह्स्य्वादी 'नालोन फ़कीर' के वहदत के पथ के बारे में
और क्या कहा जा सकता है?
मैं आपके अंदर की मानवता को सजदा करता हूं।
(नालोन फ़कीर)

अमरदीप सिंह: बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र और गंगा नदियों का त्रिभुज एक बड़ा डेल्टा बनाता है। जब गुरु नानक सोलहवीं शताब्दी में इस क्षेत्र में आये, तो यहां दोनो हिंदू और मुस्लिम मज़हबों के लोगों का निवास था। बांग्लादेश अब एक इस्लामिक मुल्क है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने सफ़र के लिये व्यापारी मार्ग लिया जो सीधे मेघा नदी के तट पर स्थित एक शहर सोनारगाँव तक जाता था। यह शहर सोलहवीं शताब्दी में सौदागरी का एक प्रमुख केंद्र था और बंगाल राज्य की राजधानी भी था। गुरु नानक और भाई मरदाना ने इस समृद्ध शहर सोनारगाँव ना जाने का फ़ैसला किया और ढाका के लिये निकल पड़े जो कि भूरी गंगा नदी के तट पर स्थित है। उस दौर में ढाका शिव मत के लिये मज़हबी तीर्थ था।

वकार ख़ान: बंगाल में बाउल सूफ़ी संतों और अन्य मनीषियों की परंपरा है। इस धरती पर बौद्ध धर्म भी फला-फूला। गुरु नानक की जुस्तजू उन्हें लंबी यात्राओं पर ले गयी थी। वह मौजूदा दौर के बांग्लादेश पहुंचे। वह सभी मज़हबों के संयोजन की तलाश में थे।

अब हम ढाकेश्वरी देवी के मंदिर जा रहे हैं जिसे हिंदू धर्म के शिव मत में 'शक्ति पीठ' का स्थान हासिल है।

अमरदीप सिंह: ऐसा माना जाता है कि ढाका का नाम ढाकेश्वरी देवी के नाम पर रखा गया था।

वर्ष सैंतालीस में विभाजन के बाद मज़हबी आधार पर आबादी का तबादला किया गया, फिर हिंदू आबादी ढाका से पलायन कर गई। अब ढाका में बचे कुछ ही स्थानीय हिंदू इस मंदिर में आते हैं। हम जब मंदिर मे थे ,एक मुसलमान अपने नवजात बच्चे को माथा टिकाने के लिये मंदिर लाया था। यह नज़ारा दिलकश था। यह इशारा करता है कि यहां मज़हबों और बिरादरियों के बीच अभी भी संबंध कायम हैं।

गुरु नानक यहां ढाकेश्वरी मंदिर की मज़हबी प्रथाओं का जायज़ा लेने और संगत के साथ गोष्ठी करने के लिये आये थे। एक तीर्थयात्री ने गुरु नानक से पूछा कि क्या वह सोनारगांव भी जाएंगे जो व्यापार और धन की राजधानी थी।

सुण मुँधे हरणाखीए गूड़ा वैण अपार ॥
पहिला वसत सिञाण कै ताँ कीचै वापार ॥
दोही दिचै दुरजना मित्राँ कूँ जैकार ॥
जित दोही सजण मिलन लहु मुँधे वीचार ॥
(सलोक, गुरु नानक)

हे, हरनाखी दुल्हन! गहन और अनंत विवेक के वचनों को सुनो।
पहले उत्पाद पहचानो फिर व्यापार करो।
नफ़े से ना जुड़ो और रचनात्मक का स्वागत करो।
ऐसे विचार जिनसे सज्जनों का मेल होता है उन पर विचार करो।
(सलोक, गुरु नानक)

हिरण को प्रकृति ने ऐसी निगाहों से नवाज़ा है जिससे चारों ओर का नज़ारा देखा जा सकता है। मगर, इसकी आंखें केंद्र बिंदु पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकती हैं, इसलिये इसे गहराई का स्पष्ट अंदाज़ा नहीं होता है। गुरु नानक ने हिरण की निगाहों की मिसाल देते हूऐ समझाया कि हमें रचनात्मक संगत की गहराई पर ध्यान करना चाहिए, वासनाओं की दुनिया के विशाल नज़ारों में भटकना नहीं चाहिए।

अब हम ढाका के उत्तर की ओर कुम्हारों की आबादी वाले रीयर बाज़ार जा रहे हैं। लिखतों में ज़िक्र है कि गुरु नानक अपने ढाका प्रवास के दौरान इस क्षेत्र में रहे थे।

स्थानीय लोगों से पूछताछ के बावजूद, हमें इस क्षेत्र में गुरु नानक के आगमन की कोई यादगार या निशानी नहीं मिली।

अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥
(राग रामकली, गुरु नानक)

निरंकार से अनंत उत्पन्न हुआ है। उन्होंने निर्गुण से सद्गुण का रूप धारण किया है।
(राग रामकली, गुरु नानक)

हमारा शरीर एक मिट्टी के बर्तन की तरह है जिसे ऐक कुम्हार की तरह, सृजनहार गढ़ता और आकार देता है। जब एक पात्र समान शरीर का प्रयोजन पूरा हो जाता तो वह फिर मिट्टी बन जाता है ताकि कुम्हार इसे नए सिरे से ढाल सके।

अब हम नीलखेत में गुरुद्वारा नानक शाही जा रहे हैं जो ढाका विश्वविद्यालय के अंदर है। स्थानीय रिवायत के अनुसार, ढाका के राजा ने गुरुद्वारा नानक शाही के लिये 900 एकड़ ज़मीन अनुदान में दी थी। बाद में उसी ज़मीन पर ढाका विश्वविद्यालय बनाया गया। उन्नीस सौ पचास की तस्वीरों में दर्ज समाधों से पता चलता है कि उदासीन संप्रदाय इस गुरुद्वारे के रख रखाव का काम करता था। 1947 में उपमहाद्वीप के विभाजन से पहले यह एक लोकप्रिय गंतव्य था। विभाजन के दौरान, ढाका की अधिकांश नानक नाम लेवा संगत पलायन कर गई थी। इसके बाद यह इमारत जर्जर हो गई। इस स्थान पर नवीनीकरण कार्य उन्नीस सौ अट्ठासी में शुरू हुआ। अब गुरुद्वारे में विभिन्न मज़हबो वाली संगत आती है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक की ढाका यात्रा की यादगार के तौर पर गुरुद्वारा नानक शाही उन्नीसवीं शताब्दी में बनाया गया था।

हमारी मुलाकात एक हिंदू परिवार से हुई जो हर रविवार को गुरुद्वारे में गुरुमुखी सीखने के लिये आता है ताकि वह गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ कर सकें और गुरु नानक के फ़लसफ़े की गहराई को समझ सकें।

तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥
(गुरु नानक)

हे हाज़रा-हज़ूर, सब तेरी रहमत की कृपा है।
(गुरु नानक)

हम एक और हिन्दू परिवार से मिले जो बहुत सालों से सापताहिक संगत के सामने कीर्तन करने के लिये गुरूद्वारे में आता है।

मैं क्या मांगू? कुछ भी तो स्थाई नहीं है।
(गुरु नानक)

हे हाज़रा-हज़ूर, मेरे ऊपर सच्चे सोच-विचार
की रहमत करो जो स्थाई है।
(गुरु नानक)

हम एक मुसलमान माँ-बेटी की जोड़ी से भी मिले जो नियमित रूप से गुरुद्वारे आतीं हैं क्योंकि वह गुरु नानक और उनके वहदत के संदेश के साथ जुड़ाव की भावना महसूस करतीं हैं।

गुलशन: मेरा नाम गुलशन है। मैं मुस्लिम बिरादरी से हूं। लोग मुझे प्यार से सिमरन बुलाते हैं। मैं, मेरे माता-पिता और मेरे भाई गुरु नानक शाही आते हैं और मुझे यहां आना अच्छा लगता है क्योंकि गुरु नानक ने कहा है कि कौन मुस्लिम है, कौन हिंदू है, कौन ब्राह्मण है, कौन ईसाई है। यहां कोई फ़र्क नही है। यहां हर धर्म के लोग आते रहते हैं। गुरु नानक तो हमारे मक्का भी गये थे।

पारश लाल बेगी गुरु नानक के नाम लेवा हैं और इस समय में गुरुद्वारा नानक शाही के अध्यक्ष हैं। हमें उनसे बात करने का मौका मिला।

पारश लाल बेगी: उनका संदेश दुनिया में धर्म को पोशाक के रूप में देखने का नहीं था क्योंकि पोशाक अर्थहीन है। अगर मैंने टोपी पहनी तो मैं मुसलमान बन गया, अगर मैंने जनेऊ पहन लिया, तो मैं हिंदू बन गया। ऐसा कुछ भी नहीं है। सभी ख़ुदा के बंदे हैं। उन्होंने इसे समझाने के लिये ख़ुदा का इस्तेमाल किया। यहां आने वाला हर तीसरा शख्स मुसलमान है। वह हमारे साथ बैठते हैं और संगत में लंगर खाते हैं।

हर रविवार को ढाका विश्वविद्यालय के मुस्लिम छात्र नानक शाही गुरुद्वारे के लंगर में आते हैं। जिस परंपरा का बीज गुरु नानक ने फर्रुखाबाद में बोया था, वह बांग्लादेश की राजधानी ढाका में जिन्दा है।

पारश लाल बेगी की देखरेख में विदेशी सिख संगत की मदद से ऐतिहासिक हस्तिलिखत गुरु ग्रंथ साहिब की बीडों को संरक्षित किया जा रहा है। इन ग्रंथों का उन्नीस सौ सत्तर के दशक की सियासी उथल-पुथल के दौरान नुकसान हो गया था।

गुरु नानक के वहदत के संदेश के अनुसार नानक शाही गुरुद्वारा का मज़हबी संयोग इस उम्मीद को जगाता है कि आने वाला समय सामाजिक एकता का होगा।

बांग्लादेश में ढाका से गुरु नानक और भाई मरदाना ने ब्रह्मपुत्र नदी में किश्ती द्वारा ढुबरी का सफ़र किया जो इस समय इंडिया के असाम राज्य में है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से भारत-बांग्लादेश सीमा को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हमने बांग्लादेश से भारत के लिये हवाई जहाज़ से उड़ान भरी और ढुबरी से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ाया।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के समय में बांग्लादेश के इलाके गोलपारा, कूचबिहार और रंगपुर के क्षेत्र का एक ही नाम था, कामरूप। इस क्षेत्र में 'तांत्रिक' पूजा की जाती है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने ढुबरी में ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे ठहराव किया।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा गुरु नानक और भाई मरदाना के ढुबरी आने की याद में बनाया गया है। यह नौवे नानक, गुरु तेग़ बहादुर की इस जगह पर आने की यादगार भी है।

बहुत सारे तीर्थों के दर्शन के अनुभव पर विचार करते हुये गुरु नानक ने ब्रह्मपुत्र के तट पर यह सबद गाया,

संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥
(राग सोरठ, गुरु नानक)

संतो की संगत विवेक के तलबगार के लिये तीर्थ समान है।
अठारह तीर्थों पर स्नान करने का सार विवेक की सची प्राप्ति से मिलता है।
(राग सोरठ, गुरु नानक)

तीरथ संस्कृत का सबद है जिसका अर्थ है 'चौराहा'। यह आत्म-पड़ताल के माध्यम से आत्म-परिवर्तन का प्रतीक है। रोशन ख़्याल लोगों के साथ संचार इस परिवर्तन का निर्णायक स्रोत है। इसलिये तीरथ का अर्थ सिर्फ़ पूजा-स्थल पर जाना ही नहीं है, बल्कि अन्धकार को तोड़ने के लिये रूहानी ज्ञान प्राप्त करना है।

ढुबरी के गुरूद्वारे में गुरु ग्रंथ साहिब के हस्तलिखित ऐतिहासिक ग्रंथों की देखभाल की जा रही है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने ढुबरी से ब्रह्मपुत्र नदी में किश्ती द्वारा गुवाहाटी का सफ़र किया। इस क्षेत्र को उस समय कामरूप कहा जाता था।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर ढुबरी से गुवाहाटी जा रहे हैं।

जब गुरु नानक गुवाहाटी आये, तो उस समय शहर का नाम प्रयाग ज्योतिसपुर था। पंद्रहवीं शताब्दी में कामरूप इलाके की कोच्चि बिरादरी तांत्रिक प्रथाओं में ग्रसत था जिसमें काला जादू शामिल है। वह नारी शक्ति की पूजा करते थे और कामाख्या उनकी देवी थीं।

अब हम गुवाहाटी में कामाख्या मंदिर जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: शहर में नीलाचल पहाड़ी पर कामाख्या मंदिर है। यह शक्ति का मंदिर है जहां तांत्रिक पूजा होती है।

कामरूप में जब भाई मरदाना भोजन लेने के लिये गये, तो कामाख्या देवी की अनुयायी, स्थानीय महिलाओं ने उन्हें तांत्रिक शक्तियों के माध्यम से अपने वश में कर लिया। 'जन्मसाखी' लेखन और कलाकृतीयों मे दर्शाया गया है कि उन्होंने भाई मरदाना को भेड़ में तबदील कर दिया। मेरा निजी विचार है कि उन महिलाएं ने भाई मरदाना की सोचने-समझने की शमता को बाधित किया होगा, जिस कारण उनकी मानसिक हालत भेड़ जैसी हो गई। यह कलाकृते उस मनुष्य को तश्बीही रूप में प्रस्तुत करती हैं जो बुराई के प्रभाव में अपना विवेक खो देता है।

गुरु नानक ने अनुमान लगाया कि भाई मरदाना मुसीबत में हैं और वह उनकी तलाश में निकल पड़े। उन औरतों ने गुरु नानक को भी लुभाने की कोशिश की, लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ। गुरु नानक ने

उनको बुरा-भला नहीं कहा, लेकिन उन्हें अपने गायन के माध्यम से उनकी सोच बदलने के लिये प्रोत्साहित किया।

करणी कामण जे थीऐ जे मन धागा होइ ॥
माणक मुल न पाईऐ लीजै चित परोइ ॥
राह दसाई न जुलाँ आखाँ अंमड़ीआस ॥
तै सह नाल अकूअणा किउ थीवै घर वास ॥
नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥
तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

अगर कर्म अच्छे हो तब मन गुणों का धागा बन जाता है।
विवेक का हीरा अनमोल है जिसे चेतना में पिरोया जाता है।
अगर कोई रौशन रास्तों पर ना चले तो मंज़िल तक पहुंचने का दावा कैसे कर सकता है?
आत्म-पड़चोल के अभ्यास को भूल कर कोई अपने भीतर के घर में कैसे रह सकता है?
नानक ने फ़रमाया कि वहदत के अलावा कुछ नहीं है।
अगर मन की दुल्हन संग निभाये तो वह शाश्वत आनंद प्राप्त कर सकती है।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा कि सदगुणी सोच पर बुरी सोच का असर नहीं होता। वह अमृत रूपी गुणों की संगत का आनंद लेते हैं।

उन महिलाओं को गुरु नानक की शराफ़त वाली सोच समझ नहीं आई। उन्होंने गुरु नानक को गाकर अपने जादू में फंसाने की कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। असफलता के बाद, महिलाओं ने लालच का दाव आज़माने के लिये उपहार पेश किये। गुरु नानक उनके जादू के असर में नहीं आये और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। उन्होंने गाया,

ताल मदीरे घट के घाट ॥
दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥
नारद नाचै कल का भाउ ॥

जती सती कह राखहि पाउ ॥१॥
नानक नाम विटहु कुरबाण ॥
अंधी दुनीआ साहिब जाण ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

मन की उत्तेजना मंजीरों और घुंघरुओं के समान है।
मनुष्य की वासनाएं ढोल पर पड़ी थाप के समान गूँजती हैं।
नारद फ़रेब की ताल पर ताली बजाता है ।
जती और सती अपने पैर कहाँ रख सकते हैं?
नानक चेतना से कुर्बान रहते हैं।
दुनिया अंधी है जिसे सर्वव्यापी नज़र नहीं आता।
(राग आसा, गुरु नानक)

चंचल मन वासनाओं के ताल पर नाचता है। वहदत के शाश्वत सत्य को जानने से ही संतुष्टि मिल सकती है।

हालात विचारों को जन्म देते हैं जो मन को ख़सूसी बर्ताव करने के लिये ढाल देते हैं। यदि मुक्ति की अभिव्यक्ति को समझा जाये, तो यह फ़ैसलाकुन विचारों को जन्म दे सकती है जो व्यक्तित्व का विकास करते हैं। गुरु नानक के विवेक भरपूर सबद को सुनकर रास्तों से भटकी हुई महिलाओं की ग़लतफहमियां दूर हो गईं।

मैं जानता हूं कि हम सभी अच्छाई के गुणों के साथ पैदा हुये हैं लेकिन मैं दुविधा में रहता हूं। मैं भौतिक चीज़ों की वासनाओं और इच्छाओं में फंसा रहता हूं। मैं इनसे कैसे मुक्त हो सकता हूं।

कनिक कामनी हेत गवारा ॥
दुबिधा लागे नाम विसारा ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

अज्ञानी मनुष्य पदार्थ और लालसाओं में फंसा है।
दुविधा में फंसा मनुष्य विवेक को भुला देता है।
(राग आसा, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १०: गभीरा (गहराई)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक की पूर्वी भारत और बांग्लादेश की यात्रा को समझने के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वे उनके विविध धार्मिक परिदृश्यों में किए गए प्रवास, उनकी विरासत को संरक्षित करने में उदासीन परंपरा के महत्व, उनकी यात्रा से जुड़े प्रमुख स्थलों और विभिन्न समुदायों में उनके संदेश की सार्वभौमिक अनुगूंज पर ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। दर्शनिक स्तर पर, ये संकेतक उनके गहरे विचारों जैसे 'सबद' और 'नाम' , लिंग समानता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता, भौतिक संपत्ति और रुहानी ज्ञान के बीच के अंतर पर उनकी अंतर्दृष्टि, तथा उनके सच्चे तीर्थ के दृष्टिकोण की खोज को आमंत्रित करते हैं। इस एपिसोड का वृत्तांत गुरु नानक की विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से जुड़ने की क्षमता को दर्शाती है, जबकि वे लगातार सार्वभौमिकता के संदेश को व्यक्त करते हैं। बिहार के ग्रामीणों से लेकर बंगाली हिंदुओं, ढाका के मुसलमानों और कामरूप के तांत्रिक परंपराओं के अनुयायियों तक, विभिन्न पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों के साथ उनके सार्थक संवाद यह दर्शाते हैं कि उन्होंने अपनी शिक्षाओं को विशिष्ट चिंताओं के अनुरूप ढालते हुए एकता, समानता और आंतरिक परिवर्तन के मूल सिद्धांतों को बल दिया। ये संकेतक न केवल यह स्पष्ट करते हैं कि गुरु नानक के दर्शन ने भौगोलिक, भाषाई और धार्मिक सीमाओं को कैसे पार किया, बल्कि उनकी उस विरासत की भी पुष्टि करते हैं जो आज भी विभिन्न समुदायों में अंतरधार्मिक सद्भाव और रुहानी खोज को प्रेरित करती है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की पूर्वी भारत और बांग्लादेश की यात्रा का मार्ग क्या था, और उन्होंने कौन से महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों का सामना किया?

यह एपिसोड गुरु नानक की पूर्व की ओर यात्रा का मानचित्र प्रस्तुत करता है: सोनपुर से, गुरु नानक और भाई मरदाना मुंगेर, भागलपुर, कंत नगर, मालदा, ढाका, धुबरी होते हुए गुवाहाटी पहुँचे। यह यात्रा उन्हें विविध धार्मिक परिदृश्यों से होकर ले गई। मुंगेर में, ऐतिहासिक विवरण बताते हैं कि सातवीं शताब्दी के चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने विवरणों में लिखा कि मुंगेर में उन्होंने कई बौद्ध मठ और मंदिर देखे। मुंगेर के लोग शिव (पौरुष ऊर्जा) और शक्ति (स्त्री ऊर्जा) की बड़ी श्रद्धा से पूजा करते थे। इस क्षेत्र में इस्लाम का प्रवेश तेरहवीं शताब्दी में 'तुर्क' (मध्य एशियाई) शासकों द्वारा हुआ। १६वीं शताब्दी में, जब गुरु

नानक बांग्लादेश से गुजरे, तब यह क्षेत्र हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों का केंद्र था। जब वे असम पहुँचे, तो उन्होंने कामरूप क्षेत्र में कोचि लोगों का सामना किया, जहाँ 'तांत्रिक' (जादुई) गूढ़ साधनाओं का प्रभाव था। वे 'शक्ति', जो स्त्री जीवन ऊर्जा है, की पूजा देवी कामाख्या के रूप में करते थे। इन विविध धार्मिक संदर्भों ने गुरु नानक की बातचीत और रुहानी दृष्टिकोण को उनकी यात्रा के दौरान कैसे प्रभावित किया होगा?

२. पूर्वी भारत और बांग्लादेश में गुरु नानक की विरासत को संरक्षित करने में उदासीन परंपरा ने कैसे योगदान दिया?

यह एपिसोड यात्रा मार्ग के दौरान गुरु नानक की विरासत को संरक्षित करने में उदासीन परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। यह उल्लेख करता है कि बिहार में, गुरु नानक के दर्शन को फैलाने के लिए 'उदासीन' (संन्यासी) संप्रदाय द्वारा कई केंद्र स्थापित किए गए थे, लेकिन हाल के समय में उनमें से अधिकांश विलुप्त हो गए हैं। मुंगेर में, 'पक्की संगत गुरुद्वारा' गुरु नानक की यात्रा की स्मृति में 'उदासीन' (संन्यासी) संप्रदाय द्वारा बनाया गया था। यह प्राचीन गुरुद्वारा बाबा परदेशी राम जी उदासीन द्वारा बनाया गया था और बाद में १९३५ ईस्वी में आए भूकंप के बाद बाबा रामदास जी उदासीन द्वारा पुनर्निर्मित किया गया। भागलपुर में, बूढ़नाथ घाट पर, 'उदासीन' (संन्यासी) समुदाय द्वारा गुरु नानक और गुरु तेग बहादुर की यात्रा की स्मृति में एक गुरुद्वारा बनाया गया था। एपिसोड परंपरा की उत्पत्ति और समुदाय की 'उदासीन' जीवनशैली की अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है, जिसमें सांसारिक बंधनों से दूर रहकर दिव्यता की खोज को समर्पित जीवन जीना शामिल है। यह परंपरा पंजाब से दूर स्थित क्षेत्रों में गुरु नानक की उपस्थिति को बनाए रखने में कैसे सहायक रही, और हाल के समय में इन केंद्रों के पतन के क्या कारण रहे?

३. गुरु नानक की यात्रा से जुड़े ऐतिहासिक स्थल कौन-कौन से हैं, और उनका वर्तमान स्थिति क्या है?

एपिसोड गुरु नानक की यात्रा से जुड़े कई स्थलों को चिन्हित करता है, जिनकी संरक्षण की स्थिति अलग-अलग है। मुंगेर में, पक्की संगत गुरुद्वारा १९३४ ईस्वी के भूकंप में नष्ट हो गया था, जिसे बाबा रामदास जी उदासीन ने १९३५ ईस्वी में पुनर्निर्मित किया। वर्तमान में, इस स्थल पर भारतीय सेना के सिख अधिकारी साप्ताहिक संगत करते हैं। एक स्थानीय परिवार, जिसकी 'उदासीन' (संन्यासी) परंपरा से जुड़ाव है, इस स्थल का वर्तमान संरक्षक है। भागलपुर में, 'उदासीन' (संन्यासी) समुदाय द्वारा एक गुरुद्वारा बनाया गया था, लेकिन वर्तमान समय में इसके कोई अवशेष नहीं मिलते। मालदा में, गुरु नानक की यात्रा की स्मृति में 'उदासीन' (संन्यासी) समुदाय द्वारा एक संगत केंद्र बनाया गया था। पुराने मालदा के जनसंख्या विहीन होने के कारण यह स्थल वीरान हो गया था। भारत के विभाजन के बाद १९४७ में मालदा में प्रवास करने वाले समुदाय द्वारा इसे १९६० के दशक में पुनर्जीवित किया गया। ढाका में,

नीलखेत स्थित 'गुरुद्वारा नानकशाही' अब भी सक्रिय है। विभाजन के पहले तक यह एक लोकप्रिय स्थल था, लेकिन १९४७ के बाद अधिकांश गुरु नानक के अनुयायी ढाका से पलायन कर गए, जिससे इमारत का क्षरण हुआ। १९८८ में इस स्थल का पुनरुद्धार शुरू किया गया। इन स्थलों की वर्तमान स्थिति गुरु नानक की विरासत की ऐतिहासिक निरंतरता के बारे में क्या संकेत देती है?

४. एपिसोड में गुरु नानक की यात्रा के दौरान कामरूप (असम) के सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को कैसे वर्णित किया गया है?

एपिसोड कामरूप क्षेत्र (जो वर्तमान में असम है) की सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं की पड़ताल करता है। यह बताता है कि उस समय, गोलपारा, कूचबिहार और बांग्लादेश का रंगपुर क्षेत्र संयुक्त रूप से कामरूप कहलाता था, जहाँ 'तांत्रिक' उपासना का गहरा प्रभाव था। जब गुरु नानक गुवाहाटी पहुँचे, तो यह शहर 'प्रयाग ज्योतिसपुर' के नाम से जाना जाता था। १५वीं शताब्दी में, कामरूप क्षेत्र के कोचि लोग 'तांत्रिक' गूढ़ साधनाओं में लिप्त थे और शक्ति की पूजा देवी कामाख्या के रूप में करते थे। एपिसोड में कामरूप के एक महत्वपूर्ण वृत्तांत का उल्लेख किया गया है, जब भाई मरदाना भोजन लाने गए, तो देवी कामाख्या की अनुयायी कुछ स्थानीय महिलाओं ने अपनी 'तांत्रिक' शक्तियों का उपयोग करके उन्हें सम्मोहित कर लिया। पारंपरिक विवरण इस घटना को शारीरिक परिवर्तन के रूप में वर्णित करते हैं, लेकिन एपिसोड इसे प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ नकारात्मक प्रभावों में फँसकर मनुष्य की तार्किक सोचने की क्षमता बाधित हो जाती है। गुरु नानक ने इस क्षेत्र में यात्रा के दौरान तर्कसंगत सोच को कैसे बढ़ावा दिया, जहाँ अद्वितीय संस्कृति और धर्म प्रचलित था?

५. गुरु नानक के रुहानी संदेश को विभिन्न समुदायों से कैसे समर्थन मिला, इसके क्या प्रमाण इस एपिसोड में दिए गए हैं?

एपिसोड विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से जुड़े अनुयायियों के उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो गुरु नानक के दर्शन से प्रभावित हुए। कंत नगर में, बिहारी जातीयता के विविध धार्मिक पृष्ठभूमि वाले लोगों का एक बड़ा समुदाय गुरु नानक का अनुयायी था। मालदा में, स्थानीय बंगाली हिंदू समुदाय के लोग श्रद्धा से गुरुद्वारे जाते हैं। ढाका के नानकशाही गुरुद्वारे में, एक हिंदू परिवार हर रविवार गुरुमुखी लिपि सीखने आता है ताकि वे 'गुरु ग्रंथ साहिब' पढ़ सकें। एक अन्य हिंदू परिवार वर्षों से साप्ताहिक कीर्तन करता आ रहा है। एपिसोड एक मुस्लिम माँ और बेटी का उल्लेख करता है, जो नियमित रूप से गुरुद्वारा जाती हैं क्योंकि वे गुरु नानक के 'एकता' के संदेश से गहरे स्तर पर जुड़ाव महसूस करती हैं। गुरुद्वारा के वर्तमान अध्यक्ष ने कहा कि हर तीसरा आगंतुक मुस्लिम होता है, जो संगत में बैठते हैं और 'लंगर' (नि:शुल्क सामुदायिक भोजन) में भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त, अधिकांश 'उदासीन' (संन्यासी)

स्थलों पर दानदाताओं के नाम पट्टिकाओं से यह जानना रोचक है कि गुरु नानक के संदेश के प्रसार के लिए स्थापित किए गए ये केंद्र स्थानीय गैर-सिख समुदाय के दान से स्थापित किए गए थे। क्या यह प्रमाण दर्शाते हैं कि गुरु नानक का दर्शन विशिष्ट धार्मिक पहचान से परे एक सार्वभौमिक अपील रखता है?

६. स्थानीय भाषाओं और बोलियों के समावेश ने गुरु नानक के संदेश के प्रसार में कैसे योगदान दिया?

एपिसोड गुरु नानक की भाषा संबंधी रणनीति को उजागर करता है। उन्होंने आम जनता को समझाने के लिए अपनी रचनाओं में स्थानीय बोलियों को शामिल किया। उनके सार्वभौमिक और मानवतावादी संदेश का प्रभाव ऐसा था कि विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक पृष्ठभूमि के लोग उनकी दर्शन को अपनाने लगे। यह सुनियोजित भाषाई समावेशिता उनके संदेशों की विविध क्षेत्रों में व्यापक स्वीकृति में महत्वपूर्ण रूप से सहायक प्रतीत होती है। उदाहरण के लिए, कंत नगर में, बिहारी जातीयता के एक स्थानीय सिख ने साझा किया कि कई लोग गुरु नानक के अनुयायी बने और उनके संदेशों को अपनाया। इसके बाद, उनकी दर्शन का प्रसार हुआ और इसे स्वीकार किया गया। इसी प्रकार, बांग्लादेश में, गुलशन नाम की एक मुस्लिम महिला ने बताया कि यहाँ आकर उन्हें अच्छा महसूस होता है क्योंकि गुरु नानक ने कहा है कि मुस्लिम, हिंदू, ब्राह्मण, ईसाई में कोई अंतर नहीं है। यहाँ कोई भेदभाव नहीं है। क्या गुरु नानक की भाषा संबंधी नीति ने उनकी सार्वभौमिक शिक्षाओं को विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं के पार फैलाने में सहायक भूमिका निभाई?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक अपने संदेशों में 'सबद' और 'नाम' की अवधारणाओं को कैसे समझाते हैं?

यह एपिसोड गुरु नानक के 'सबद' और 'नाम' को उनके रुहानी ढांचे के आवश्यक तत्वों के रूप में प्रस्तुत करता है: 'सबद' का अर्थ है संचार का माध्यम, जिसके द्वारा 'नाम', आत्मचिंतन की बुद्धि, प्राप्त की जाती है। 'सबद' नौका है और 'नाम' पतवार, जो व्यक्ति को सांसारिक समुद्र पार करने में सहायता करता है। यह रूपक उनके एक सबद में प्रकट होता है, जिसमें कहा गया है कि ज्ञान के शब्दों के बिना संसार-समुद्र पार नहीं किया जा सकता। आत्मचिंतन के बिना, संसार द्वैत की बीमारी से ग्रस्त रहता है। संदेह में यह डूब जाता है और नष्ट हो जाता है। एपिसोड यह भी उल्लेख करता है कि भागलपुर में, एक ऐतिहासिक स्थल के वर्तमान संरक्षक 'गुरु ग्रंथ साहिब', सिख ग्रंथ की लिपि को पढ़ने में सक्षम नहीं हैं, फिर भी वे साप्ताहिक संगत के दौरान गाए जाने वाले श्लोकों को समझने का प्रयास करते हैं। यह प्रश्न उठता है: हम में से कितने लोग, जो वास्तव में 'गुरु ग्रंथ साहिब' पढ़ सकते हैं, इन गहन शब्दों के सार को समझने में

सक्षम हैं? गुरु नानक का 'सबद' और 'नाम' का विवरण पारंपरिक धार्मिक ग्रंथों और रुहानी अभ्यास की सामान्य समझ को कैसे चुनौती देता है?

२. गुरु नानक के सबदों में लिंग समानता पर उनकी दृष्टि कैसे परिलक्षित होती है?

एपिसोड गुरु नानक के लिंग समानता पर दृढ़ दृष्टिकोण को उनके एक सबद के माध्यम से उजागर करता है, जिसमें कहा गया है कि स्त्री से सभी जन्म लेते हैं, और स्त्री के बिना कोई भी नहीं होता। एपिसोड इस विचार को स्पष्ट करता है कि ऐतिहासिक रूप से, जीवन प्रदान करने वाले लिंग के रूप में महिलाओं को दुनिया भर के पितृसत्तात्मक समाजों में समान दर्जा नहीं दिया गया है। गुरु नानक ने लिंग भेदभाव के विरुद्ध जोरदार आवाज उठाई। उन्होंने याद दिलाया कि महिलाओं के बिना मानव जाति का अस्तित्व संभव नहीं है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण सीधे उनके समाज में महिलाओं के योगदान के अवलोकन से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है, जैसा कि एपिसोड में उल्लेख है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सहजता से कई कार्यों को करते हुए देखना—बच्चों की परवरिश, परिवार को भोजन उपलब्ध कराना, खेतों में काम करना—गुरु नानक के समर्थन की याद दिलाता है। गुरु नानक का यह प्रगतिशील दृष्टिकोण उस समय की सामाजिक मान्यताओं को कैसे चुनौती देता है, और उनके रुहानी संदेशों के व्यापक सामाजिक आयामों को समझने में इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

३. गुरु नानक भौतिक संपत्ति और रुहानी ज्ञान के बीच क्या अंतर बताते हैं?

एपिसोड कई उदाहरण प्रस्तुत करता है जहाँ गुरु नानक भौतिक संपत्ति और रुहानी ज्ञान के बीच विरोधाभास को संबोधित करते हैं। मालदा में, जब वे राम देव नामक धन उधार देने वाले व्यक्ति से मिले, जो अपनी संपन्नता का प्रदर्शन कर रहा था, तो गुरु नानक ने कहा कि चंदन का तेल अंगों पर लगाया जा सकता है, रेशमी वस्त्र शरीर पर पहने जा सकते हैं, लेकिन आत्मचिंतन के बिना शांति कैसे प्राप्त हो सकती है? एपिसोड यह समझाता है कि गुरु नानक का संदेश राम देव को यह एहसास कराने के लिए था कि संपन्नता का प्रदर्शन एक उथला सुख है। चिरस्थायी संतोष के लिए, व्यक्ति को भौतिकवाद से स्वयं को अलग करना आवश्यक है। इसी प्रकार, हाजीपुर में, उन्होंने सालिस राय को सलाह दी कि संपन्नता को रुहानी विकास में बाधा नहीं बनने देना चाहिए और कहा कि अद्रका, जो एक साधारण कर्मचारी था, रुहानी रूप से अधिक जागरूक हो सकता है। विनम्रता, न कि सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक स्थिति, अच्छाई का मापदंड है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण पारंपरिक सफलता और संतोष के मापदंडों को कैसे चुनौती देता है, और गुरु नानक स्थायी संतोष प्राप्त करने के लिए क्या विकल्प प्रस्तुत करते हैं?

४. एपिसोड में गुरु नानक के अनुसार सच्चे तीर्थ की अवधारणा क्या है?

एपिसोड गुरु नानक की तीर्थ यात्रा की अवधारणा की मौलिक पुनर्व्याख्या को उजागर करता है। ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर धुबरी में ध्यान करते हुए, गुरु नानक ने एक सबद गाया, जिसमें सुझाव दिया कि रुहानी रूप से जागरूक श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ संगति करना तीर्थ यात्रा के बराबर है। एपिसोड समझाता है कि 'तीर्थ' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ है एक चौराहा। यह आत्म-बोध की उपमा है, जिसे व्यक्तिगत खोज के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। प्रबुद्ध व्यक्तियों के साथ संवाद परिवर्तन का उत्प्रेरक हो सकता है। अतः 'तीर्थ', सच्ची तीर्थयात्रा, धार्मिक स्थलों की शारीरिक यात्रा नहीं बल्कि रुहानी ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया है, जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यह दृष्टिकोण उस समय की प्रचलित प्रथाओं को सीधे चुनौती देता है। उदाहरण के लिए, जब एक यात्री ने पूछा कि मोक्ष के लिए वाराणसी में मरना कितना महत्वपूर्ण है, तो गुरु नानक ने उत्तर दिया कि जो ज्ञान को समर्पित होता है, वह कभी नहीं मरता और कहा कि नकारात्मकता की मृत्यु के बिना ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है? गुरु नानक की तीर्थयात्रा की इस पुनर्व्याख्या से यह कैसे स्पष्ट होता है कि रुहानी विकास बाहरी यात्रा से आंतरिक परिवर्तन की ओर स्थानांतरित होता है?

५. गुरु नानक का कामरूप की महिलाओं के साथ संवाद उनके परिवर्तन के दृष्टिकोण को कैसे प्रकट करता है?

एपिसोड कामरूप में हुए एक महत्वपूर्ण वृत्तांत का वर्णन करता है, जहाँ देवी कामाख्या के अनुयायी कुछ स्थानीय महिलाओं ने अपनी 'तांत्रिक' (जादुई) शक्तियों से भाई मरदाना को सम्मोहित कर लिया। जब गुरु नानक उनकी खोज में गए, तो वही महिलाएँ उन्हें भी आकर्षित करने का प्रयास करने लगीं। हालाँकि, वे अप्रभावित रहे। एपिसोड यह उजागर करता है कि महिलाओं को फटकारने के बजाय, गुरु नानक ने अपने रुहानी सबदों के माध्यम से उन्हें प्रेरित किया और उनके विचार बदलने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक सबद के माध्यम से इस विचार को व्यक्त किया कि यदि कर्म अच्छे हों, तो मन गुणों की माला में पिरो जाता है। इस समझ से प्राप्त ज्ञान अमूल्य है और चेतना में समाहित हो जाता है। जब महिलाएँ उन्हें आकर्षित करने का प्रयास करती रहीं, तो वे अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे और उन्हें फटकारने के बजाय एक और सबद के साथ उत्तर दिया। एपिसोड निष्कर्ष निकालता है कि गुरु नानक के ज्ञानपूर्ण शब्दों को सुनकर, इन महिलाओं की भ्रांतियाँ दूर हो गईं। यह वृत्तांत गुरु नानक की इस धारणा को कैसे उजागर करता है कि सभी लोगों में अच्छाई की संभावना निहित होती है और रुहानी परिवर्तन डांटने या दंडित करने के बजाय ज्ञान से होता है?

६. गुरु नानक मृग की दृष्टि के रूपक का उपयोग करके ध्यान और विचलन के बारे में अपने विचार कैसे व्यक्त करते हैं?

एपिसोड एक अनूठे रूपक को प्रस्तुत करता है, जिसे गुरु नानक ने एक यात्री के उत्तर में प्रयोग किया, जिसने सोनारगाँव की समृद्ध नगरी की यात्रा के बारे में पूछा था। उन्होंने एक सबद गाया, जिसमें रूपक रूप में कहा गया कि पहले, व्यक्ति को वस्तु की जाँच करनी चाहिए, फिर अकेले सौदा करना चाहिए। संकल्पित रहें, नकारात्मकता से बचें और सकारात्मकता को अपनाएँ। मृग का रूपक रोचक है, क्योंकि यह व्यक्त करता है कि मृग प्राकृतिक रूप से अपने आसपास के वातावरण को विस्तृत दृष्टिकोण से देख सकता है, लेकिन इसकी आँखें विशेष विवरणों पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थ होती हैं, जिससे इसकी गहराई देखने की क्षमता सीमित होती है। गुरु नानक इस उदाहरण का उपयोग यह सलाह देने के लिए करते हैं कि व्यक्ति को गहरे, सकारात्मक संबंधों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, बजाय कि सतही सांसारिक आकर्षणों से विचलित होने के। यह रूपक गुरु नानक के विचारों को विवेक, ध्यान और सार्थक संबंधों के निर्माण के महत्व के बारे में कैसे स्पष्ट करता है?